Contents

बिषय - सूची

पृष्ठ

१- प्रथम अध्याय : 18 - 74

दिनकर की भारतीय संस्कृति विषयक अवधारणा

संस्कृति का स्वरूप

भारतिय संस्कृति विषयक दिनकरण की अवधारणा ।

(क) भारतीय जनता की रचना और हिन्दू संस्कृति का आविर्भाव

वैष्णव धर्म, मूल्यांकन -

(ख) द्वितीय सोपान : वैचारिक क्रान्ति

क्रान्ति की गंगा (जैन और बौद्ध धर्म)

मूल्यांकन

क्रान्ति की गंगा में शैवाल

मूल्यांकन

(ग) भारतीय संस्कृति और इस्लाम

धर्म और समाज क्षेत्रीय समन्वय

मूल्यांकन

ललित कलाओं के क्षेत्र में समन्वय

भाषा और साहित्य के क्षेत्र में समन्वय

समीक्षा

(घ) भारतीय संस्कृति और यूरोप

२- द्वितीय अध्याय : पृष्ठ 75 - 121

युगगत सांस्कृतिक पुनर्जागरण

आधार भूमि

पृष्ठ

सांस्कृतिक पुनर्जागरण और ब्रह्मसमाज
प्रार्थना समाज,
वैदिक धर्म का पुनरुज्जीवन एवं आर्य समाज
एनीबेसेन्ट और थियोसोफिकल सोसायटी
रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानन्द
निष्कर्ष
सांस्कृतिक पुनर्जागरण का पूर्वापर : एक मूल्यांकन
परवर्ती राष्ट्रीय आन्दोलन तथा सांस्कृतिक जागरण

३- तृतीय अध्याय : 122 – 182

आधुनिक हिंदी कविता में सांस्कृतिक चेतना -
भारतेन्दु युग : सांस्कृतिक चेतना का आरंभिक युग
१- सामाजिक सुधार व मानववादी दृष्टिकोण-नारी जागरण
२- राष्ट्रीय चेतना
भारत भूमि के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना
ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध
आर्थिक शोषण, अतीत के प्रति गौरव भावना
३- सांस्कृतिक पुनरुत्थान -
अतीत के प्रति गौरव गान ,
इतिहास का अवबोध, स्वभाषा प्रेम
मूल्यांकन
सांस्कृतिक चेतना का द्वितीय पदन्यास : द्विवेदी युग
सांस्कृतिक पुनरुत्थान का विकास काल

पृष्ठ

१-सामाजिक भावना,
२- राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना
भारत भूमि की वन्दना
राष्ट्रीय सांस्कृतिक परंपरा के प्रति गौरवानुभूति
स्वतंत्रता की चेतना और विदेशी शासन के प्रति असंतोष
भाषा, राष्ट्रभाषा व साहित्य के प्रति अनुराग
मूल्यांकन ।
छायावाद : हिंदी कविता का उत्कर्ष काल
छायावाद की बृहदत्रयी
नारी के उदात्त रूप की प्रतिष्ठा
परवर्ती युग

४- चतुर्थ अध्याय : 133 -- 219

सांस्कृतिक अध्ययन के दृष्टिकोण से काव्य-कृतियों का परिचय-
काव्य-कृतियां
(१) प्रण भंग(२) रेणुका(३)हुंकार(४)रसवन्ती(५) द्वन्द्वगीत
(६) कुरुक्षेत्र(७)सामधेनी(८)बापू(९)इतिहास के आंसू
(१०) धूप और धुंआ(११)रश्मिरथी(१२)दिल्ली(१३)नीम के पत्ते
(१४) नीलकुसुम(१५)चक्रवाल(१६)कविश्री(१७)सीपी और शंख
(१८) नए सुभाषित(१९)उर्वशी(२०)परशुराम की प्रतीक्षा
(२१)कोयला और कवित्व(२२) मृत्ति तिलक(२३)आत्मा की आँखें
(२४) हारे को हरिनाम(२५) दिनकर की सूक्तियाँ
(२६) संचयिता(२७)रश्मिलोक
मूल्यांकन -

५- पंचम -अध्याय : पृष्ठ 220 - 259

दिनकर के काव्य में सामाजिक-आर्थिक चेतना की अभिव्यक्ति

दिनकर की सामाजिक चेतना

सामाजिक समानता

सामाजिक विकृतियां

साम्प्रदायिक विष

ग्राम्य -जीवन की दीनता, वर्ग संघर्ष

सामाजिक-आर्थिक शोषण ।

देशवासियों की दुर्दशा

मूल्यांकन ।

६- षाष्ठ- अध्याय : 260 — 294

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय तथा राजनीतिक चेतना

(१) ~~डिनकै~~ दिनकर के काव्य में राजनीतिक संदर्भ

(२) विदेशी शासन के प्रति विद्रोह

(३) भारत और भारतीय परंपरा के प्रति गौरव की भावना

(४) स्वतंत्रता परवर्ती राष्ट्रीय चेतना

(क) यथार्थवादी स्वर

(ख) असन्तोष का स्वर

(ग) क्रांतिकारी स्वर

(५) अन्तर्राष्ट्रीयता एवं मानवतावाद

निष्कर्ष ।

७- सप्तम्-अध्याय : पृष्ठ

295 - 343

जीवन-दर्शन तथा इतर सांस्कृतिक पक्ष

१- आध्यात्मिक और धार्मिक जीवन

(क) संस्कृति और अध्यात्म

२- जीवन-दर्शन तथा कामाध्यात्म

३- जीवन-दर्शन के अन्य आयाम

(क) कर्म-मार्ग (ख) यथार्थ-दर्शन

(ग) प्रगतिवादी दर्शन (घ) युद्ध दर्शन

४- ललित कलाएं

५- इतर सांस्कृतिक पक्ष

दिनकर के काव्य में जीवन- मूल्य

(१) सामाजिक मूल्य (२) आध्यात्मिक मूल्य

(३) नैतिक मूल्य (४) राजनीतिक मूल्य

५-सांस्कृतिक परिवेश : आस्थाएं और मान्यताएं

मूल्यांकन -

८- उपसंहार - 344 - 359

परिशिष्ठ (क) 360 - 362

दिनकर का सम्पूर्ण साहित्य

परिशिष्ठ (ख) 363 - 371

आलोचनात्मक ग्रन्थ

परिशिष्ठ (ग) 372 - 374